इकाई 28 शहरीकरण, शहरी वर्ग तथा जीवन शैली

इकाई की रूपरेखा

28.0 उद्देश्य

मध्यकालीन भारत का नगरीय इतिहास अत्यधिक महत्वपूर्ण और रोचक विषय है। इस इकाई के अध्ययन से आप :

- मध्यकालीन भारत में शहरीकरण में जान सकेंगे तथा साथ-साथ इस विषय में प्रतिपादित प्रमुख दृष्टिकोणों की जानकारी भी प्राप्त करेंगे;
- मध्यकालीन शहरों की भौतिक विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे; तथा
- मध्यकालीन शहरी जीवन की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

28.1 प्रस्तावना

मुगलकालीन भारत का शहरी इतिहास एक महत्वपूर्ण विषय होने के बावजूद इतिहासकारों का पर्याप्त ध्यान आकृष्ट नहीं कर पाया है। इस विषय में अध्ययन के विविध क्षेत्रों की बड़ी संख्या इसके बहुआयामी होने की ओर संकेत करती है। शहरी केन्द्रों का विस्तार, उनका आकार, नगरीय अर्थव्यवस्था, तथा शहरी समाज इस विषय में अध्ययन के आयामों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।

इस इकाई में पहले हम आपको नगरीय इतिहास से परिचित करायेंगे। हम सैद्धांतिक के साथ-साथ शहरीकरण के अध्ययन के प्रति अपनाये गये सामान्य परिप्रेक्ष्य के विषय पर भी चर्चा करेंगे। हम प्रमुखत: शहरों की संरचना और शहरी जीवन शैली पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि इस प्रकार के अध्ययन में हमारा दृष्टिकोण इस बात से निर्धारित होगा कि हम किस प्रकार के प्रश्न और उनके उत्तर आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। आप देखेंगे कि शहरों की संरचना और शहरी समाज और जीवन का जो प्रारूप हम यहां प्रस्तुत करेंगे वह मध्यकालीन शहरीकरण के प्रश्न से सीधे संबंधित है।

28.2 परिप्रेक्ष्य

विद्वानों ने शहरीकरण का शहरों के भौतिक विकास और एक विशिष्ट जीवन शैली (शहरी) के रूप में अध्ययन किया है। पश्चिमी देशों में इस क्षेत्र में कॉफी काम किया गया है परन्तु भारत में शहरी इतिहास

का अध्ययन अभी विकास की व्यवस्था में है। इस भाग में हम भारत में इस विषय में अब तक किये गये शोधों के आधार पर तत्कालीन शहरी संरचना की जानकारी देंगे।

गांव के विपरीत शहरों की दो प्रमुख विशेषताओं पर अब आम सहमति है। प्रथम तो यह कि शहर एक घनी आबादी वाला ऐसा क्षेत्र था जिसका विस्तार सीमित और निर्धारित था। दूसरा यह कि यहां की जनसंख्या प्रमुखत: गैर-कृषि आधारित थी। इस प्रकार शहरों में व्यक्ति: स्थान अनुपात सीमित था और यहाँ के निवासी विविध प्रकार के व्यवसायों में कार्यरत थे।

मध्यकालीन भारत में शहरीकरण के विषय में विभिन्न व्याख्यायें दी गई हैं। इन व्याख्याओं में शहरीकरण के जिन कारणों पर चर्चा की गई है वह प्रमुखत: चार प्रकार के शहरी केन्द्रों के विकास की ओर इंगित करते हैं:

i) प्रशासनिक
ii) धार्मिक
iii) सैनिक/सामरिक महत्व के
iv) बाजार (वाणिज्यिक)

प्रशासनिक शहर स्वाभाविक रूप से प्रशासन के केन्द्रों के रूप में कार्य करते थे। मुगलकाल के दिल्ली और लाहौर जैसे शहर इसी श्रेणी में आते थे। धार्मिक केन्द्र प्रमुखत: तीर्थ यात्रियों को आकृष्ट करते थे, उदाहरण के लिए वाराणसी तथा मथुरा। सैनिक और सामरिक महत्व के शहरों का विकास प्रमुख रूप से छावनियों के रूप में हुआ। बाद में इन केन्द्रों में गैर सैनिक जनसंख्या भी बस गई। अटक और असीरगढ़ जैसे शहर इस श्रेणी के थे। चौथी श्रेणी में ऐसे शहर आते हैं जो वाणिज्यिक गतिविधियों के केन्द्र या उत्पादन के स्थल थे। अक्सर इस प्रकार के शहरों में दोनों गतिविधियां केन्द्रित होती थी। इस श्रेणी में मुगल साम्राज्य के पटना और अहमदाबाद जैसे शहर आते थे।

यहां हमें दो बातों का ध्यान रखना जरूरी है। पहला यह कि मुगल काल का एक औसत शहर सामाजिक व्यवहार और विशेषताओं में गांव का एक विस्तृत रूप था। यह ग्राम शहर अविच्छन्नता मुगलकालीन शहरीकरण की एक प्रमुख विशेषता थी। मुगल शहरी अर्थव्यवस्था की विविधता को देखते हुए इस काल के भारतीय शहर का कोई एक निश्चित स्वरूप स्थापित करना भ्रामक होगा। दूसरी विशेषता यह थी कि बाह्य रूप से समान (कार्यों की दृष्टि से) दिखते हुए भी दो शहर वास्तव में काफी भिन्न होते थे। वास्तव में किसी शहरी केन्द्र का विकास इसकी ऐतिहासिक परिस्थितियों और भौगोलिक अवस्थिति पर निर्भर था।

28.3 शहरी परिदृश्य

मुगल शहरों की विभिन्नता के विषय में उपरोक्त चर्चा को स्वीकार करते हुए भी इन शहरों की कुछ सामान्य विशेषतायें निम्नानुसार देखी जा सकती हैं।

28.3.1 भौतिक विन्यास

अधिकांश शहर एक ऐसी चारदीवारी में स्थित होते थे जिसमें एक या अधिक प्रवेशद्वार होते थे। शहर की प्रमुख जनसंख्या इन चारदीवारी के अंदर ही रहती थी। शहरों के विस्तार के साथ अक्सर शहरी जनसंख्या इन दीवारों के बाहर तक बसने लगती थी। 17वीं शताब्दी के अंत में जॉन जार्डन का आगरा का वर्णन एक विशिष्ट मुगल शहर के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। जार्डिन के अनुसार "यह शहर नदी की दिशा में 12 कोस लम्बा है जो लगभग 16 मील के बराबर है। यह एक चारदीवारी में स्थित है, परन्तु उपशहरी बस्ती शहर की दीवारों से लगी हुई ही थी। अगर दीवारों में प्रवेश द्वार न हों तो यह कह पाना मुश्किल होगा कि आप शहर की दीवारों के भीतर हैं या बाहर।" अक्सर अमीर और कुलीन शहर की दीवारों के बाहर अपनी कोठियां और बाग बनवाते थे। इस प्रकार दिल्ली, आगरा, पटना, अहमदाबाद और इलाहाबाद जैसे नगरों के बाहर इन कोठियों और बागों के आस-पास बस्तियां बन कर उपशहर बस गये।

सुनियोजित बसाये गये शहरों में बाजार अलग से बनाये जाते थे। अन्य शहरों में सड़कों के दोनों ओर दुकानें होती थीं। दुकानदार स्वंय इनके ऊपर या पीछे के भाग में रहते थे। अधिकांश शहरों में एक से अधिक बाजार होते थे। कई बाजार किसी खास वस्तु के व्यापार के लिए विशिष्ट रूप से जाने जाते थे। अक्सर बाजारों के नाम उन विशिष्ट वस्तुओं का हवाला देते है। उदाहरण के लिए आगरा में लोहा गली (लोहे की वस्तुएं), दाल मंडी, साबुन कटरा (साबुन का बाजार), नील पाड़ा (नील के लिए), दिल्ली में जौहरी बाजार (आभुषणों के लिए), सब्जीमंडी, (सब्जी के लिए), चूड़ी वाला (चूड़ियों के लिए), आदि। दिल्ली में पहाड़गंज, अनाज की थोक मंडी थी।

जिन क्षेत्रों में शहर की जनसंख्या रहती थी वे मुहल्लों में बंटे हुए होते थे। अधिकतर मुहल्ले किसी खास जाति या उत्पादक समुदायों के नामों से जाने जाते थे। उदाहरण के लिए कुंजड़ो मुहल्ला (सब्जी के बेचने वाले) मोची बाड़ा (जूते बनाने वाले), मुहल्ला जरगरान (सुनार), कूचा रंगरेजन (कपड़े रंगने वाले), आदि इस प्रकार के नाम लगभग सभी मुगल शहरों में पाये जाते हैं। कभी-कभी यह मुहल्ले उनमें रहने वाले प्रमुख व्यक्तियों, आदि के नाम से भी जाने जाते थे।

शहरों की एक अन्य विशेषता वहां पर सरायों का होना था। **सराय** व्यापारियों और यात्रियों के लिए रहने का स्थान थी। छोटे शहर में भी कम से कम एक **सराय** होती थी। दिल्ली, आगरा, पटना, लाहौर और अहमदाबाद जैसे शहरों में बड़ी संख्या में **सरायें** पाई जाती थी। अधिकांशतः कुलीन, बड़े व्यापारी, शाही घराने की महिलायें तथा राज्य की ओर से इन **सरायों** को बनवाया जाता था। यात्रियों को यहां सामान रखने के भंडार गृह से लेकर अन्य सभी प्रकार की सुविधायें मिलती थी। भटियारों के परिवार **सरायों** के रख-रखाव का कार्य करते थे। भटियारे सरायों के देखभाल करने वालों के रूप में प्रसिद्ध हो गये थे। शहर में आने वाले विदेशियों को नगर के प्रशासकों को अपने आने और जाने के विषय में सूचित करना पड़ता था।

सामान्य शहरों में किसी भी प्रकार के योजनाबद्ध विकास का अभाव था। प्रमुख मार्गों के अलावा अन्य सड़के तथा गलियां संकरी और मिट्टी की बनी होती थीं। शहरों के नियमित प्रशासन के लिए एक पृथक विकसित प्रशासनिक व्यवस्था थी।

28.3.2 शहरी जनसंख्या की संरचना

शहरों की जनसंख्या एक प्रकार की न होकर मिश्रित प्रकार की थी। समकालीन स्रोतों में हमें शहरों में विभिन्न वर्गों के लोगों के निवास के विषय में जानकारी मिलती है। इनको मोटे तौर पर चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

i) कुलीन और उनके सहयोगी, राज्य के अधिकारी तथा सैनिक।
ii) व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधियों से संबंधित वर्ग (व्यापारी, सर्राफ, दलाल, आदि)।
iii) धार्मिक प्रतिष्ठानों से संबंधित वर्ग, संगीतकार, चित्रकार, कवि, लेखक, वैद्य, हकीम, आदि।
iv) कारीगर, मजदूर विभिन्न प्रकार के सेवक आदि।

विभिन्न शहरों में विभिन्न वर्गों के प्रकार, संख्या, आदि उस शहर की प्रकृति पर निर्भर करते थे, अर्थात् वे प्रशासनिक केन्द्र थे अथवा वाणिज्यिक केन्द्र या अन्य। साम्राज्य के प्रमुख केन्द्र या राजधानी में संभवतः सबसे बड़ा वर्ग सम्राट और कुलीनों के सैनिक और सेवकों का था। बर्नियर (1658 ई.) ने सम्राट शाहजहां के शिविर में लोगों की संख्या लगभग 3-4 लाख आंकी थी।

अन्य प्रशासनिक केन्द्रों की स्थिति भी लगभग यही थी। गवर्नर प्रातीय उच्च कुलीन तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारी सभी के साथ बड़ी संख्या में सैनिक, आश्रित, सेवक, गुलाम और परिवार के सदस्य होते थे।

अधिकांश बड़े शहर व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र होते थे इसलिए इन शहरों में वाणिज्यिक वर्ग महत्वपूर्ण होता था। एक अनुमान के अनुसार अहमदाबाद में केवल हिन्दू व्यापारियों की कुल जातियों और उपजातियों की संख्या लगभग 84 थी। 1640 ई. में पटना में लगभग 600 दलाल थे। समकालीन

स्रोतों में लगभग सभी बड़े शहरों में मीलों लम्बे बाजारों का वर्णन मिलता है। पटना जैसे औसत आकार के शहर में परचून की 200 से अधिक दुकानें थी। जोधपुर जैसे शहर में भी महाजनों की 600 दुकानें थीं।

शहरों में रहने वाला अन्य महत्वपूर्ण वर्ग विद्वानों, वैद्यों, हकीमों तथा कला और संगीत से जुड़े लोगों का था। सामान्यत: धार्मिक कायो के लिए और दान में दी जाने वाली राजस्व मुक्त भूमि भी शहरों के आस-पास दी जाती थी। इसके अतिरिक्त अधिकांश कवि, संगीतकार, चिकित्सक, आदि शहरों में ही रहते थे क्योंकि यहां धन कमाने के साधन थे तथा साथ ही यहीं उन्हें सम्राट और कुलीनों का संरक्षण भी प्राप्त हो जाता था।

व्यापारिक और वाणिज्यिक शहरों में एक बड़ी जनसंख्या, कारीगर, मजदूर और अन्य कार्मिक वर्गों की होती थी। हम इस काल के कारीगर उत्पादों की चर्चा इकाई 22 में कर चुके हैं। उत्पादन की विभिन्न क्रियाओं से जुड़े कारीगरों को कई वर्गों में बांटा जा सकता है।

i) ऐसे कारीगर जो स्वंय वस्तुएं बनाते और बेचते थे।
ii) ऐसे कारीगर जो सम्राट या कुलीनों के कारखानों या भवन निर्माण गतिविधियों में कार्यरत थे।
iii) कई उत्पादन क्षेत्रों में एक बड़ी संख्या अर्द्धकुशल कारीगर या अकुशल कार्मिकों के रूप में कुशल कारीगरों के सहायक के रूप में कार्य करती थी। जहाज निर्माण, हीरे, नमक या शोरे के खनन उत्पादन के ऐसे क्षेत्र थे।
iv) घरेलू सेवकों या मजदूरों के रूप में कार्यरत एक बड़ा वर्ग भी शहरों में पाया जाता था।

28.3.3 शहरी जनसांख्यिकी

तबकात-ए अकबरी (लगभग 1593 ई.) के अनुसार अकबर के काल में लगभग 120 बड़े शहर और 3200 कस्बे (छोटे शहर) थे। 17वीं शताब्दी में उद्योग व व्यापार के विकास के साथ यह संख्या भी बढ़ी होगी। निश्चित स्रोतों और अभिलेखों के अभाव में विभिन्न शहरों की ठीक-ठीक जनसंख्या पता करना संभव नहीं है। इरफान हबीब के अनुसार कुल जनसंख्या का लगभग 15 प्रतिशत शहरों में निवास करता था।

विभिन्न शहरों के आकार के विषय में कुछ यूरोपीय यात्रियों के वृत्तांतों से जानकारी मिलती है। इन्होंने कहीं-कहीं तो अपने अनुमान दिये हैं और कहीं भारतीय शहरों की तुलना यूरोपीय शहरों से की है। इस प्रकार की जानकारी कुछ गिने चुने शहरों के बारे में ही दी गई है।

कुछ मुख्य शहरों के बारे में आकलन निम्नलिखित है :

शहर	आकलन	जनसंख्या
आगरा	1609	5,00,000
	1629-43	6,66,000
	1666	8,00,000
दिल्ली	1659-66	5,00,000
लाहौर	1581	4,00,000
	1615	7,00,000
अहमदाबाद	1613	1,00,000
		2,00,000
सूरत	1663	1,00,000
	1600	2,00,000
पटना	1631	2,00,000
ढाका	लगभग 1630	2,00,000

(स्रोत : इरफान हबीब, **कैम्ब्रिज इक्नॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,** भाग 1, पेज 171)

जनसंख्या के उपरोक्त आकलनों के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत के उस समय के शहर यूरोपीय शहरों के समकक्ष थे।

बोध प्रश्न 1

1) मध्यकालीन शहरों के उत्कर्ष के कारणों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) **सराय** पर 50 शब्दों में एक टिप्पणी लिखिये।

....

....

....

....

....

3) सही वक्तव्यों पर (√) सही का और गलत वक्तव्यों पर (×) गलत का चिन्ह लगाइए :

i) **भटियारे** सरायों का रख रखाव करते थे।

ii) **तबकात-ए अकबरी** के अनुसार अकबर के काल में 120 बड़े शहर और 3200 कस्बे थे।

iii) इरफान हबीब के अनुमान के अनुसार लगभग 12 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में निवास करती थी।

28.4 शहरी जीवन

हमारे मुगलकालीन स्रोत शहरी जीवन के विषय में काफी जानकारी प्रदान करते हैं। निम्नलिखित उपभागों में हम इसी जानकारी के आधार पर शहरी जीवन पर प्रकाश डालेंगे।

28.4.1 जीवन स्तर

मध्यकालीन शहरी जीवन स्तर में काफी विषमता दिखाई देती है। जहां एक और उच्च वर्गों के लोग शाही तरीके का रहन-सहन अपनाते थे वहीं दूसरी और शहरों की गरीब जनता निम्न स्तर का जीवन व्यतीत करती थी। गोवा में आम जनता के जीवन स्तर के बारे में लिन्शोटन (1580-1590 ई) लिखता है कि " वे इतने गरीब हैं कि एक पैसे के लिए कोड़े सहने को तैयार हैं, वे इतना कम खाते हैं कि ऐसा लगता है कि वे हवा पर जिन्दा हैं, इसलिए ये सारे लोग आकार में छोटे और इनके हाथ पांव में कोई जान नहीं है" "डी. लायट भी कुछ इसी प्रकार के विचार प्रकट करता है। वह कहता है कि "आम लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय है, मजदूरी कम है, मजदूरों को दिन में एक ही बार भोजन प्राप्त हो पाता है, रहने के घर तुच्छ और बिना किसी साज-सामान के हैं, जाड़ों में स्वयं को गर्म रखने के लिए पहनने और ओढने के साधन भी नहीं हैं।"

आइन-ए अकबरी तथा उस काल के कुछ यूरोपीय स्रोत (पेल्सर्ट, पेट्रोडेला वेला आदि) दर्शाते हैं कि शहरी मजदूरों की औसत आय 3-4 रुपये प्रतिमाह थी। परन्तु शीरींन मुसवी (**इक्नॉमी ऑफ मुगल**

एम्पायर) ने अपने शोधों के आधार पर दर्शाया है कि अकुशल कार्मिक की वस्तुएँ खरीदने की शक्ति 1867-1871-72 की तुलना में 1595 ई. में ही अधिक थी। उनके अनुसार अकबर के काल में एक शहरी कार्मिक 1867 के इसी प्रकार के कार्मिक की तुलना में अधिक गेहूँ, मोटे अनाज, घी और शक्कर, आदि खरीद सकता था। इसी प्रकार वह 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अपनी तरह के मजदूर की तुलना में अधिक अच्छा भोजन आदि प्राप्त करता था। अकबर के काल के मजदूर केवल कपड़े खरीदने की क्षमता में काफी पीछे थे। एक साधारण मजदूर की तुलना में एक कुशल कारीगर की वस्तुएं खरीदने की क्षमता 19वीं शताब्दी में और भी अधिक कम हो गई थी। शीरीन मूसवी के अनुसार यह कहा जा सकता है कि 1867 की तुलना में लगभग 1600 ई. में शहरी वेतन अधिक थे।

मध्यवर्ग विशेष कर राजस्व विभाग के अधीनस्थ अधिकारी, छोटे **मनसबदार**, चिकित्सक तथा छोटे व्यापारी, आदि एक अच्छे स्तर का जीवन गुजारते थे। बुद्धिजीवी वर्ग ज्यादातर गरीब था और अधिकांशतः अपने जीवन-यापन के लिए कुछ संरक्षकों पर निर्भर था। कुलीन तथा अन्य उच्च वर्ग अत्यंत शान-शौकत का जीवन व्यतीत करते थे। हमें विवरण मिलता है कि एक कुलीन के लड़के ने चांदनी चौक (दिल्ली) में एक दिन में एक लाख रुपये की खरीददारी की। मोरलैंड कहता है कि "संचय करने की जगह खर्च करना ही उस काल की विशेषता थी।" शीरीन मूसवी ने शाही घराने और कुलीनों की उपभोग पद्धति का अध्ययन किया है। उपभोग की पद्धति शाही घराने और अमीरों तथा कुलीनों की जीवन शैली पर प्रकाश डालती है।

खर्च की मद	शाही परिवार प्रतिशत में	कुलीन प्रतिशत में
हरम (जनानखाना)	18.68	14.25
रसोई	7.28	7.04
वस्त्र	8.93	7.32
भवन (निर्माण)	8.01	6.57
शिविर से संबंधित व्यय	5.53	4.54
बर्तन	7.97	6.54
पशुओं का शिकार	1.41	1.16
पुस्तकें तथा कलाकृतियां	3.60	2.96
आभूषण व रत्न	23.65	19.40
पालतू और शिकारी पशु	6.94	5.69
विविधा	1.33	1.09
नक़द अनुदान	6.67	-
पैदल सैनिक	-	8.43
हथियार	-	9.67
बोझा ढोने वाले पशु	-	2.65
प्रदर्शन के लिए रखे जाने वाले पशु	-	2.69

इन आंकड़ों से साफ प्रदर्शित होता है कि मुगल कुलीन लगभग 75 प्रतिशत अपने आराम और विलासिता की वस्तुओं पर व्यय करता था। यह रईसी की जीवन शैली अक्सर उन्हें कंगाल बना देती थी। बर्नियर के अनुसार "......... दूसरी ओर अधिकांश अमीर कर्ज में डूबे हुए थे, सम्राट को भेंट में दिए जाने वाले कीमती उपहार और उनके विस्तृत घर-गृहस्थी के खर्चे उन्हें बर्बाद कर देते थे। इस कारण वे किसानों से अधिक से अधिक अनुचित वसूलियां करते थे।"

किन्तु कारीगर उत्पादन के विकास में कुलीनों ने काफी योगदान दिया है। शीरीन मूसवी की गणना के अनुसार कुलीनों के वेतन का लगभग 63.26 प्रतिशत किसी न किसी प्रकार के कारीगर उत्पादन पर खर्च

होता था। कुल **जमा** (अनुमानित आय) का लगभग 37.38 प्रतिशत औसत रूप से कारीगर उत्पादन पर खर्च होता था। यह कहा जा सकता है कि कारीगर उत्पादों पर खर्च काफी अधिक था। परन्तु यह उत्पादन व्यापार के उद्देश्य से नहीं अपितु व्यक्तिगत उपभोग के लिए था। इसलिए भारी निवेश के बावजूद यह उत्पादन किसी प्रकार के आंतरिक बाजार (कारीगर उत्पादन के व्यापार के लिए) को जन्म नहीं दे सका।

वस्त्र

मध्यम और उच्च् वर्गों के वस्त्र पहनने और उपभोग, आदि का स्तर लगभग समान था। पहने हुए वस्त्रों के स्तर के आधार पर वे अलग से पहचाने जा सकते थे। पुरुष विशिष्ट प्रकार की शलवार या चूड़ीदार पजामा तथा कमीज पहनते थे। जाड़ों में रूई भरी कोटी या सदरी तथा लम्बा ढीला कोट **क़बा** भी पहनते थे। साथ ही कंधों पर शॉल, कमर में पटका और सिर पर एक पगड़ी भी रहती थी। कहा जाता है कि हुमायूं ने एक नये प्रकार के कोट का चलन शुरू किया। यह कमर पर फिटिंग वाला और आगे से खुला होता था। वह इसे **क़बा** (चोगे) के ऊपर पहनता था। इस प्रकार का कोट अक्सर सम्राट द्वारा कुलीनों को सम्मानसूचक वस्त्रों (खिल्लत) के रूप में भेट किया जाता था। स्त्रियाँ ब्लाउज और एक बड़ी चादर पहनती थीं। दोआब क्षेत्र में लहंगा और चोली तथा एक प्रकार का बड़ा दुपट्टा काफी लोकप्रिय थे। मुस्लिम महिलायें ढ़ीली शलवार, कमीज और दुपट्टा तथा अक्सर बुर्का पहनती थीं। वस्त्रों के लिए सादा या धारीदार सूती और रेश्मी कपड़े का उपयोग होता था।

अकबर अपने वस्त्रों की ओर काफी ध्यान देता था। अबुल फजल के अनुसार प्रत्येक वर्ष उसके लिए एक हजार जोड़े बनाए जाते थे। वह अपने सभी पुराने वस्त्र नौकरों को दान कर देता था। बर्नियर कहता है कि "अमीर व्यापारी कोशिश करते थे कि वे दरिद्र दिखें ताकि उनसे धन न निचोड़ा जाय।" परन्तु बारबोसा कालीकट के मुस्लिम व्यापारियों के पहनावे और वस्त्रों की काफी प्रशंसा करता है। इसी प्रकार डेला वैले भी सूरत के व्यापारियों की शान-शौकत की चर्चा करता है। हिन्दू कुलीन भी अपना पहनावा अपने मुस्लिम साथियों की भांति अपनाते थे। इसके अतिरिक्त ब्राह्मण मस्तक पर तिलक भी लगाते थे और राजपूत कानों में कुंडल पहनते थे।

निम्न वर्ग के लोग बहुत ही कम वस्त्र पहनते थे। आगरा और लाहौर की आम जनता के विषय में साल बंक लिखता है कि "साधारण लोग इतने दरिद्र हैं कि उनमें से अधिकांश नग्न रहते हैं।" यूरोपीय यात्रियों ने दक्षिण भारत के विषय में भी लगभग इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं। विजयनगर के आम लोगों के विषय में बारबोसा कहता है कि "इनका पूरा शरीर नग्न रहता है और केवल शरीर का मध्य भाग ढकने के लिए एक कपड़े का प्रयोग करते हैं। " लिन्शोटन (1580-1590 ई.) कहता है कि "गोवा के आम लोग बहुत गरीब हैं और लगभग नग्न रहते हैं।" बाबर कहता है कि "कृषक और निम्न वर्गों के लोग लगभग नग्न रहते हैं। वह एक प्रकार का लंगोट पहनते हैं जिसे टांगो के बीच से पीठ के पीछे ले जाकर गांठ लगाते हैं। औरतें भी एक प्रकार का वस्त्र पहनती हैं जिसका एक हिस्सा कमर पर बांधती हैं और दूसरा सिर के ऊपर ले जाती हैं। जाड़ों में पुरुष रूई भरा कोट और इसी प्रकार की टोपी पहनते हैं।" दक्षिण में अधिकांश लोग नंगे पांव रहते थे।

बोध प्रश्न 2

1) मुगल काल के शहरी मजदूरों के जीवन स्तर की तुलना 19वीं शताब्दी के शहरी मजदूरों से कीजिए।

....

....

....

....

....

2) मुगल काल के शहरों के गरीब लोगों के वस्त्रों पर टिप्पणी लिखिये।

....

....

....

....

....

28.4.2 सामाजिक जीवन

संयुक्त परिवार व्यवस्था का सामान्य प्रचलन था। महिलाओं को पुरुषों के अधीन रहना होता था। उच्च वर्गों की महिलायें पर्दा प्रथा का पालन करती थीं। बारबोसा का कहना है कि खम्बात में पर्दा प्रथा थी परन्तु महिलायें अपने मित्रों के यहां आती जाती रहती थीं। पर्दा प्रथा की सीमाओं के भीतर सामाजिक सम्पर्क और व्यवहार की पूर्ण स्वतंत्रता थी।

जौहर प्रथा केवल राजपूतों में ही प्रचलित थी। उनकी महिलायें असफलता या युद्ध आदि में पराजय की स्थिति में अपने सम्मान की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से जल कर अपने प्राणों की आहुति दे देती थीं। बाबर ने चन्देरी में मेदनीराय की पराजय के बाद उसकी स्त्रियों द्वारा जौहर किए जाने का विस्तृत वर्णन किया है। उच्च जाति के हिन्दुओं में सती प्रथा भी काफी प्रचलित थी। मारवाड़ के मोटा राजा की पुत्री को अपनी इच्छा के विरुद्ध जलने के लिए बाध्य किया गया था। अकबर ने इस घटना को बहुत गंभीरता से लिया और प्रत्येक शहर और सरकार में पर्यवेक्षक नियुक्त किये। इनका कार्य इस बात पर नजर रखना था कि किसी भी स्त्री को सती होने के लिए बाध्य न किया जाए। अगर कोई स्त्री अपनी इच्छा से सती हो रही हो तो उसे न रोका जाये। अकबर ने (1587 ई.) विधवाओं को पुन: विवाह करने की इजाजत देने के संबंध में भी कदम उठाये।

हिन्दू और मुसलमान दोनों ही लड़के और लड़कियों के विवाह कम उम्र में करने के पक्ष में थे परन्तु अकबर बाल-विवाह के विरुद्ध था। उसने लड़कियों के लिए शादी की न्यूनतम उम्र 14 वर्ष और लड़कों के लिए 16 वर्ष निश्चित की।

जन्म उत्सव का विशेष महत्व था। मुसलमानों में जन्म के बाद **अकीका** (शिशु के सर के बाल मूंडना और पशु की बलि देना) उत्सव मनाया जाता था। हिन्दूओं में भी जन्म के समय धार्मिक अनुष्ठान होते थे। मध्यम वर्गों में हिन्दू बच्चे को 5 साल की उम्र में शिक्षा के लिए गुरु के पास छोड़ देते थे जबकि मुसलमानों में परंपरा थी कि बच्चे को 4 साल 4 महीने और 7 दिन की आयु पर **मकतब** (स्कूल) भेजा जाता था। इसे **बिस्मिल्लाह ख्वानी** कहा जाता था। सामान्यत: मुस्लिम लड़कों का खतना 7 साल की आयु में कराया जाता था। अकबर ने आदेश दिया कि 12 साल की आयु से पहले खतना न कराया जाये और इसे बालक की इच्छा पर भी छोड़ने का आदेश दिया। हिन्दुओं में **उपनयन** संस्कार काफी महत्व था। इसमें बालक को 9 वर्ष की आयु में पवित्र धागे पहनाये जाते थे।

वैवाहिक अनुष्ठान लगभग आज प्रचलित पद्धति की ही तरह थे। हिन्दू विवाह का आरंभ तिलक और मंगनी से होता था। तत्पश्चात् लगन (विवाह की तारीख) की तिथि निर्धारित की जाती थी। गाना बजाना होता था और विवाह के विस्तृत अनुष्ठान और समारोह होते थे।

मृत्यु के बाद भी काफी अनुष्ठान और कर्मकाण्ड होते थे। पुजारी मंत्र पढ़ते थे, दान दिये जाते थे और एक साल के बाद श्राद्ध होता था। मुसलमानों में मृत्यु के तीसरे दिन **सोयम** नामक अनुष्ठान प्रचलित था।

कुलीन और बड़े व्यापारी विवाह के अवसर पर काफी धन खर्च करते थे। खेमचन्द नामक व्यापारी ने अपनी पुत्री के विवाह के लिए 15 लाख रुपये खर्च करने की योजना बनाई थी परन्तु रास्ते में लूट लिया गया। दारा शिकोह के विवाह पर लगभग 32 लाख रुपये खर्च किए गए थे। 17वीं शताब्दी में सिंध

आये और एक यात्री बोक्कारों के अनुसार एक आम विवाह पर लगभग 4-5 हजार रुपये खर्च होते थे। अपने परिवार में एक विवाह के अवसर पर राजा, भगवानदास ने कई घोड़े, 100 हाथी, भारत, अबीसीनिया और करकेशिया के लड़के लड़कियां, विभिन्न प्रकार के रत्न जड़ित गहने, बर्तन आदि, दिये।

शिक्षा

शिक्षा की सुविधायें आम स्त्रियों की पहुंच से बाहर थीं। उच्चवंश की महिलाओं को शिक्षा की पूर्ण सुविधायें थीं। राजकुमारियों के लिए भी शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। अकबर ने भी स्त्रियों की शिक्षा में रुचि ली। बदायूनी लिखता है कि उसने एक नया पाठ्यक्रम निर्धारित किया था। उसने फतेहपुर सीकरी में लड़कियों के लिए एक स्कूल की स्थापना की। शाही परिवार की कुछ महिलाओं ने भी लड़कियों की शिक्षा में विशेष रुचि दिखाई। हुमायूं की पत्नी बेगा बेगम ने हुमायूं के मकबरे के पास लड़कियों के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। अकबर की सौतेली मां महम अंगा ने भी दिल्ली में एक स्कूल बनवाया। हुमांयू की बहन गुलबदन बानू बेगम फारसी और तुर्की का अच्छा ज्ञान रखती थी। उन्होंने **हुमायूंनामा** नामक ग्रंथ की रचना की। इसी प्रकार नूरजहां (जहांगीर की पत्नी), जहांआरा (शाहजहां की पुत्री), तथा जेबुननिसा (औरंगजेब की पुत्री) अपने काल की साहित्यक रुचि वाली महिलायें थीं। औरंगजेब ने अपनी सभी पुत्रियों की अच्छी शिक्षा की व्यवस्था की। नृत्य और संगीत को पसंद नहीं किया जाता था। नूरजहां और जहांआरा राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाती थीं। अनेक कुलीन **मनसबदार** फारसी के ज्ञाता थे। कुछ गणित और चिकित्सा विज्ञान की जानकारी रखते थे। और कुछ लेखन कला में भी रुचि रखते थे। मुगल काल के अनेक कुलीनों के पास अपने व्यक्तिगत ग्रंथालय थे। अब्दुल रहीम खान खाना के पास अपना एक बड़ा ग्रन्थालय था जिसमें लगभग 95 सुलेखक, शिल्पी, चित्रकार, जिल्दसाज और पाण्डुलिपियों की सजावट करने वाले थे।

बाबर स्वयं तुर्की भाषा का महान विद्वान था। उसकी पुस्तक **बाबरनामा** को तुर्की गद्य की एक उत्कृष्ट कृति माना जाता है। वह फारसी का भी ज्ञाता और एक कुशल सुलेखक था। हुमायूं और उसके बाद के लगभग सभी मुगल सम्राट फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। हालांकि, अकबर, परिस्थितियों के कारण, औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाया परन्तु उसने अनेक कवियों, लेखकों, दार्शनिकों, चित्रकारों तथा चिकित्सकों, आदि को संरक्षण प्रदान किया।

बोध प्रश्न 3

1) अपने काल की सामाजिक कुरीतियों के प्रति अकबर के दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) मुगल राजकुमारियों की शिक्षा की स्थिति पर टिप्पणी लिखिये।

....

....

....

....

....

28.4.3 मनोरंजन और आमोद प्रमोद

जुआ खेलना, हाथियों की लड़ाई, चौपड़, **चंडाल मंडल**, शतरंज, ताश, पोलो, आदि ऐसे प्रमुख खेल थे जिनमें उच्च वर्ग के लोग रुचि लेते थे। हिन्दुओं और विशेषकर राजपूतों में चौपड़ का खेल बहुत लोकैप्रिय था। अकबर ने चौपड़ के मोहरों के स्थान पर व्यक्तियों का प्रयोग करना शुरू किया और चौपड़ एक अत्यंत रोचक खेल **चंडाल मंडल** के रूप में विकसित हुआ। ताशों का खेल (**गंजीफा**) संभवत: भारत में पहली बार बाबर द्वारा लाया गया था। अकबर के काल में यह काफी लोकप्रिय हो गया। जुआ खेलना आम प्रचलन में था। कबूतरबाजी और मुर्गों की लड़ाई आदि खेल भी काफी प्रचलित थे। अकबर स्वयं अपने पक्षियों को दाना देता था और उसने कबूतर उड़ाने के खेल को **इश्क बाजी** (प्रेम का खेल) का नाम दिया।

शिकार खेलना शाही घराने का एक प्रिय शौक था। मुगल **कमरगाह** शिकार का आयोजन करते थे। इसमें एक संख्या में सवारों द्वारा (कभी-कभी लगभग 50,000 घुड़सवार) एक बड़े क्षेत्र से जानवरों को हुँकार कर शाही शिकारगाह में लाया जाता था। इस हाँके द्वारा धीरे-धीरे एक घेरे में जानवरों को लाया जाता था। तत्पश्चात् सम्राट और प्रमुख कुलीन घेरे के जानवरों का शिकार करते थे। हिरन, बकरियां, हाथी, आदि भी शिकार के लिए पाले जाते थे। चीतों को हिरन का शिकार करने के लिए पाला और प्रशिक्षित किया जाता था। उत्तर भारत के बहुत से क्षेत्रों में शाही शिकारगाहें स्थापित की गई थी जो शाही परिवार के सदस्यों के शिकार खेलने के लिए सुरक्षित रहती थीं। चीता, शेर और हाथियों का शिकार करना शाही परिवार का विशेषाधिकार था।

साधारणतया शाही परिवार की महिलायें महल के बाहर के खेलों में भाग नहीं लेतीं थी। परन्तु कुछ पोलो खेलती थीं। केवल नूरजहां ही शेर और बाघों के शिकार के लिए जाती थी। कबूतर बाजी तथा आंखमिचोली ही इनके प्रिय खेल थे।

उत्सव और मेले

धार्मिक उत्सव तथा तीर्थस्थलों और मजारों की यात्रा मन बहलाने के प्रमुख साधन थे। सूफी संतों की मजारों पर बड़े पैमाने पर **उर्स** (वार्षिक उत्सव) मनाये जाते थे। दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया और शेख बख्तियार काकी की मजारों पर बड़े **उर्स** होते थे। दिल्ली में हजरत नासिरउद्दीन चिराग दिल्ली (ह. निजामउद्दीन औलिया के उत्तराधिकारी) की मजार पर विशेषकर दीपावली के महीने में प्रत्येक इतवार को बड़ी संख्या में हिन्दू और मुसलमान जमा होते थे। **ईद उल फितर, ईद उल जुहा, नौरोज** (ईरानी नव वर्ष), शबबरात, होली, दशहरा, दीपावली, रक्षा बंधन, बसंतपंचमी, आदि प्रमुख त्यौहार काफी धूम-धाम से मनाये जाते थे। मेलों का भी आयोजन होता था। गढ़मुक्तेश्वर का प्रसिद्ध मेला जो आज भी लगता है, मध्य काल में ही शुरू हुआ था। दशहरे का त्यौहार क्षत्रिय तथा अनेक खेतिहर समुदायों में काफी लोकप्रिय था। गंगा के किनारे लगने वाला कुंभ मेला सर्वाधिक लोकप्रिय था। **मुहर्रम** के अवसर पर शहर की सड़कों से **ताजियों** (**करबला** के शहीदों की मजारों की अनुकृतियां) की शोभायात्रा निकाली जाती थी।

संगीत

बड़े अमीर अपने भवनों और हवेलियों में मुशायरों का आयोजन करते थे। जहां कवि अपनी रचनाओं का पठन करते और साहित्यिक चर्चा करते थे। संगीतकार और गायक जनान-खाने में सम्राट और महिलाओं के मनोरंजन के लिए अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। कविन्द्र, चित्रा खां, लाल खां तथा श्रीमन शाहजहां के प्रिय संगीतकार थे। शाहजहां के एक अमीर शाहनवाज खां ने भी बड़ी संख्या में संगीतकारों को संरक्षण प्रदान किया। सम्राट मौहम्मद शाह भी बड़ा संगीत प्रेमी था। उसके काल में बोली खां, जलाला, चमनी, और कमलबाई प्रसिद्ध संगीतकार थे। नियामत खां एक कुशल बांसुरी वादक और ख्याल शैली का गायक था। उसकी शिष्या पन्ना बाई एक अत्यंत सुरीली आवाज वाली गायिका थी। ताज खां कव्वाल तथा मईनुद्दीन, कुशल कव्वाली गायक, और मौहम्मद शाह के काल के प्रसिद्ध संगीतकार थे।

हिजड़े सार्वजनिक नृत्यों में भाग लेते थे। मियां हैगा नामक हिजड़ा शाहजहांनाबाद के किले के सामने उर्दू बाजार के चौक में नृत्य का प्रदर्शन करता था। उसे देखने के लिए काफी भीड़ लग जाती थी। आसा पुरा नाम की एक हिन्दू नर्तकी भी काफी प्रसिद्ध थी।

भाटों और चारणों द्वारा आल्हा और नल दमयन्ती का गायन किया जाता था। हिन्डोलों और श्रवनी जैसे श्रवण गान भी लोकप्रिय थे। पश्चिमी तटों के क्षेत्र में गुजराती नृत्य गर्भा काफी लोकप्रिय था। कठपुतलियों का तमाशा, बंदरों के खेल, सांपों का प्रदर्शन, नटों के कर्तब आम जनता के प्रिय मनोरंजन थे। बड़े लोगों के घरों में नृत्य और भोजों के बड़े जश्न (समारोह) आयोजित किए जाते थे। हुमांयू ने यमुना नदी के तट पर पिकनिक मनाने के आयोजन शुरू किये। उसने शाही परिवार की महिलाओ के लिए **मीना बाजार** आयोजित करने की परंपरा भी शुरू की जो उसके बाद के सम्राटों के काल में और भी समृद्ध और विकसित हुए।

मद्यपान सामान्य प्रचलन में था। अकबर का मानना था कि सीमित मात्रा में शराब का सेवन स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। अफीम का सेवन भी आम था। भांग एक अन्य नशीला पदार्थ था जिसका सेवन होता था।

16वीं शताब्दी में तम्बाकू के प्रयोग की जानकारी नहीं थी। 17वीं शताब्दी में जब भारत में तम्बाकू का प्रचलन हुआ तो इसका प्रयोग तेजी से फैल गया। वेश्यावृत्ती भी प्रचलित थी।

बोध प्रश्न 4

1) निम्न को परिभाषित कीजिए ?

इश्कबाजी ....

....

....

....

चन्डाल-मंडल ....

....

....

....

कमरगाह शिकार ....

....

....

....

2) **उर्स** के उत्सवों पर टिप्पणी ?

....

....

....

....

....

28.5 सारांश

मध्यकाल में शहरी केन्द्र और शहरी जीवन एक विकसित अवस्था में थे। भारत में नगर, शहर और ग्रामीण क्षेत्रों का एक अच्छा मिश्रण थे। इसका स्पष्ट कारण यह था कि अधिकांश शहर वास्तव में गांव का विस्तार ही थे। शहरी जनसंख्या मिली जुली प्रकार की थी। जीवन स्तर में भी विषमतायें थीं। जहां तक और शाही परिवार और उच्च कुलीन वर्ग विलासिता और वैभव का जीवन व्यतीत करते थे वहीं दूसरी ओर शहरी गरीब अत्यंत दरिद्रता का जीवन गुजारते थे। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि मुगलकालीन शहरों के मजदूर और कार्मिक वर्ग की खाद्य पदार्थ खरीदने की क्षमता 19वीं शताब्दी के अपने समकक्ष वर्गों की तुलना में, अधिक थी। इस मान दंड के आधार पर मुगलकालीन शहरी कार्मिक वर्ग 19वीं शताब्दी के ऐसे वर्ग की तुलना में कुछ बेहतर दिखाई देता है।

मुगलकाल में कई सामाजिक कुरितियों जैसे सतीप्रथा, बाल विवाह, शिशु बलि तथा कुछ अन्य प्रथायें जैसे पर्दा, जौहर, आदि प्रचलन में थी। अकबर ने सुधार कुछ लागू किये। उसने जबरदस्ती सती होने की प्रथा पर रोक लगाई। शिक्षा की सुविधा अधिकांश स्त्रियों की पहुंच से बाहर थी। शाही परिवार की महिलाओं को औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था थी। मनोरंजन और क्रीड़ा के क्षेत्र में मुगल सम्राटों ने कुछ मौलिक योगदान किया। कुछ नये खेलों का प्रचलन किया (ताश, आदि) तथा कुछ खेलों में किंचित परिवर्तन किये (चौपड, आदि)। धार्मिक त्यौहार और मेलों का ओयोजन आज की ही भांति काफी धूमधाम से किया जाता था। आजकल प्रचलित बहुत से मेलों का प्रारंभ वस्तुतः मुगल काल में हुआ था।

28.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 28.2 देखें। विभिन्न प्रकार के नगरों के उत्थान के कारणों की विवेचना करें।

2) देखें उपभाग 28.3.1 ।

3) i) √ ii) √ iii) ×

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 28.4.1 तथा तुलना करें कि क्या मध्यकालीन कार्मिक की स्थिति बेहतर थी।

2) देखें उपभाग 28.4.1

बोध प्रश्न 3

1) देखें उपभाग 28.4.2 समकालीन सामाजिक बुराइयों की ओर अकबर की संवेदनशीलता की चर्चा कीजिए। अकबर ने हिन्दु तथा मुसलमानों में प्रचलित कुप्रथायों को सुधारने के प्रयास किये।

2) देखें उपभाग 28.4.2

बोध प्रश्न 4

1) देखें उपभाग 28.4.3 (मनोरंजन तथा आनन्दोत्सव)।

2) देखें उपभाग 28.4.3 (त्यौहार और मेले)।